शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 नवम्बर 2019
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

डॉ.हर महेंद्र सिंहबेदी : व्यक्तित्व और कृतित्व

हेतराम (शोधार्थी)
ओपीजेएस विश्वविद्यालय
चूरु, राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

भारत के पंजाब प्रान्त में भक्ति और शक्ति का अद्भुत समन्वय दृष्टिगोचर होता है गुरुओं की शिक्षा ने पंजाब को समृद्ध किया है। वहां के वातावरण में गुरुओं की वाणी निरंतर गूंजती रहती है वह सहृदय साहित्यकारों को प्रेरणा प्रदान करती है। दूसरी ओर वहां शक्ति का अजस्त्र स्रोत भी बहता रहता है संत-सिपाही के भाव से आप्लावित पंजाब की साहित्य परंपरा अखंड रूप से बहती चली आ रही है। वर्तमान काल में डॉ.हर महेंद्र सिंह बेदी पंजाब के साहित्यकारों में प्रमुख हस्ताकार हैं प्रस्तुत शोध पत्र में डॉहर महेंद्र सिंह के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डाला गया है।

व्यक्तित्व

डॉ. हर महेंद्र सिंह बेदी पंजाब के प्रख्यात साहित्यकारों में से एक हैं। डॉ. बेदी का जन्म 12 मार्च 1950 को पंजाब के होशियारपुर जिले के मुकेरिया गाँव में हुआ। श्रीमती जसवंत कौर और सरदार प्रीतम सिंह की छः संतानों में से आप द्वितीय स्थान पर हैं। आपको गुरुमत विचार की शिक्षा-दीक्षा परिवार के धार्मिक वातावरण से प्राप्त हुई। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती गुरनाम कौर राजकीय महाविद्यालय अमृतसर से प्राचार्य के पद से सेवानिवृत्त हुईं। आपके पुत्र श्री मगेन्द्र सिंह और पुत्री शेफाली शिक्षा के क्षेत्र में अपनी सेवायें दे रही हैं। डॉ.बेदी सहज और सरल व्यक्तित्व के धनी हैं। हरियाणा स्थित इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय के कुलपति रामसजन पांडे कहते हैं कि बेदी जी परम संतोषी और विनम्र हैं। डॉ.बेदी को साहित्य सृजन की प्रेरणा आपके पिता से प्राप्त हुई। डॉबेदी अपने स्वर्गीय पिता को याद करते हुए लिखते हैं -'' बड़ी सूक्ष्म दृष्टि से पंजाब के नव निर्माण को देखते रहे। मैंने बहुत कुछ अपने पिताजी से सीखा। उर्दू भाषा को बहुत प्यार करते थे। गालिब, मीर तकी, फैज, वारे शाह और शिवकुमार बडावली से बहुत प्रभावित थे। घर में अदबी का माहौल था। मैंने जब आठवीं कक्षा में हिंद-पाक युद्ध पर कविता लिखी तो वे बहुत खुश हुए। हिंदी और पंजाबी उनको बहुत कम आती थी, लेकिन मुझे प्रेरणा देते हुए हमेशा कहा करते थे कि "तू बड़ी भाषा के साथ जुड़ रहा है। तेरा भविष्य भी उज्ज्वल होगा और परिवार भी तेरे कारण देश में जाना जाएगा मुझे अपने पिता का यह आशीर्वाद हमेशा मिलता रहा और मैं साहित्यिक एवं अकादमिक दुनिया में पाँव रखना सीख गया।" आप वर्तमान में केंद्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश धर्मशाला में कुलाधिपति पद पर सेवारत हैं।

कृतित्व

डॉ.बेदी जी ने पंजाब के हिंदी साहित्य का इतिहास लिखकर देश को पंजाब के साहित्यकारों से परिचित करवाने में अपना योगदान दिया। आपको हिंदी भक्ति साहित्य को गुरुमुखी लिपि में लिखने का श्रेय जाता है। इससे पंजाब के विद्यार्थी हिंदी के भक्ति साहित्य से परिचित हो

सके। गुरुमुखी लिपि में ब्रज और अवधी भाषा का साहित्य प्रचुर मात्र में मिलता है। आपने बच्चों के लिए चन्दामामा बाल साहित्य पत्रिका का प्रकाशन किया। डॉ.बेदी ने हिंदी साहित्य के इतिहास पर पाश्चात्य स्रोतों के प्रभाव का अध्ययन किया। इसमें साहित्य इतिहास का सैद्धांतिक मूल्यांकन करते हुए विभिन्न विधाओं में हिंदी साहित्य इतिहास के पुनःलेखन की संभावनाओं को रेखांकित किया। इसके अतिरिक्त डॉ.बेदी ने काव्य में मध्यमवर्गीय समाज की व्याकुलता को तोड़कर उसे नई पहचान दिलाने व नई दिशा देने वाली प्रेरक कविताएँ लिखी।

आपके काव्य में रसीले व लचीली भावभंगिमा की मौज-मस्ती नहीं है, जबकि मानवता की व्याकुलता की वह तड़प है, जिससे हर कोई उबरना चाहता है। यही प्रेरणा एक लघुमानव को ऊपर उठने के लिए नई दिशा प्रदान करती है। आपके काव्य में सामाजिक उत्तरदायित्व का बोध व प्रतिबद्धता है।

आपके प्रमुख काव्य संग्रह हैं गर्मलोहा, पहचान की यात्रा, किसी और दिन, फिर से फिर, धुंध में डूबा शहर, और कहाँ, एकांत में शब्द।

आपके गद्य साहित्य में भी अनेक ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं। आपका गद्य खण्ड भी साहित्य सृजन की अमूल्य निधि है। आपने श्रद्धाराम फुल्लौरी के काव्य से भी हिंदी प्रेमियों को परिचित करवाया। आपके ग्रंथों में दार्शनिक चिंतन का भाव विद्यमान है। डॉबेदी का गद्य साहित्य है : प्रथम स्वच्छन्दतावादी उपन्यासकार : बाबू बज्रनन्दन सहाय, हिंदी साहित्येतिहास के पाश्चात्य स्रोत, गुरु गोविन्द सिंह और पंजाब का भक्ति साहित्य, गाँधी दर्शन और विचार, स्वामी विवेकानन्द, हिंदी साहित्य इतिहास-दर्शन की भूमिका, पंजाब के हिंदी साहित्य का इतिहास, गुरु नानकदेव, गुरुमुखी लिपि में उपलब्ध भक्ति साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन।

आपके द्वारा संपादित ग्रंथ हैं : भाई गुरुदास के कवित्त सवैये, सौन्दर्योपासक बाबू ब्रजनन्दन सहाय, रीति साहित्य : विविध संदर्भ, कालजयी कबीर, पंडित श्रद्धाराम फिल्लौरी ग्रंथावली (तीन भाग), ग्वालकृत विजय विनोद। डॉ.बेदी प्राधिकृत शोध पत्रिका के 11 अंकों के संपादक रहे हैं। आपने विश्वविद्यालय के अनेक पाठ्य पुस्तकें लिखीं। आप पंजाबी साहित्य अकादमी लुधियाना, पंजाबी भाषा अकादमी जालंधर, भारतीय हिंदी परिषद् इलाहाबाद, संचेतना पत्रिका के आजीवन सदस्य हैं। डॉ.बेदी ने पंजाबी से हिंदी, हिंदी से पंजाबी और अंगरेजी पुस्तकों का अनुवाद किया है।

साहित्य सेवा के लिए डॉ.बेदी को अनके सम्मान और पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। भारत के राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी ने हिंदी साहित्य सेवी पुरस्कार प्रदान किया। 'गर्म लोहा' काव्य संग्रह पर आपको राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। उत्तरप्रदेश हिंदी साहित्य परिषद ने कविरत्न उपाधि, अखिल भारतीय साहित्य कला मंच मुरादाबाद, विवेक गोयल साहित्य पुरस्कार समिति बरेली, हिंदी साहित्य एवं कला परिषद अमृतसर, हिंदी पंजाबी अकादमी चंडीगढ़ इत्यादि अनेक संस्थाओं ने अनवरत साहित्य साधना के लिए आपको सम्मानित किया है। डॉ.बेदी के साहित्यिक योगदान के लिए त्रिवेणी साहित्य सदन जालंधर ने जुलाई 2017 में पारसमणि अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित किया। आपके मार्गदर्शन में 30 से अधिक शोधार्थियों ने पीएचडी की और 75 से अधिक एम.फिल. की डिग्री हासिल की है। आपके 300 से अधिक शोध पत्र विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 नवम्बर 2019
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

अनादि काल से पावन वीर गुरु भूमि पंजाब ने सदैव साहित्य एवं संस्कृति के माध्यम से नव सृजन करते हुए संपूर्ण भारतीय धर्म व संस्कृति की रक्षा-सुरक्षा के साथ-साथ अनेक रमणीय कथाएँ भावी पीढ़ी को प्रदान की है। अतः भारतीय धर्म के लेखन संरक्षण व संस्कृति इत्यादि संदर्भों पर व्याख्यान हो तो पावन गुरु भूमि पंजाब का नाम ना आए ऐसा संभव नहीं है। हिंदी साहित्य को पंजाब में अनेक मूर्धन्य कवियों को जन्म दिया है। समकालीन पंजाब के कवि एवं काव्य आज हिंदी को संवारते हुए नई दिशा प्रदान कर रहे हैं। आज हम किसी अहिंदी भाषी क्षेत्र के किसी हिंदी प्रेमी की चर्चा करें तो पंजाब के डॉ हर महेंद्र सिंह बेदी का नाम स्वत् ही स्मरणीय हो जाता है। डॉ बेदी जी ने अपना सर्वस्व समर्पित हिंदी सेवा को देते हुए आज भी साहित्य साधना में निरंतर लीन हैं। मृदुल भाव के हृदय कवि डॉ. हर महेंद्र सिंह बेदी का हिंदी साहित्य जगत् के समकालीन साहित्यकारों में सशक्त हस्ताक्षर हैं। आपकी लेखनी जहाँ गद्य खंड में धर्म व संस्कृति की सुगंध बिखेरती हैं वहीं पद्य में विभिन्न रूपों के दर्शन कराते हुए मर्यादा, ओजस्वी भाव, कर्तव्य बोध,गुण कथन, आत्मचिंतन, उदारीकरण के भाव से शिक्षित कराती है। वास्तव में उनकी गुरुमत विचारधारा,उनका सद् व्यवहार व घनिष्ठ हिंदी प्रेम उन्हें सादगीपूर्ण व्यक्तित्व के धनी आत्मीयता व धैर्य को प्रकट करती है।

डॉ.बेदी की रचनाधर्मिता

भारतीय धर्म व संस्कृति सुरक्षा-संरक्षा में सिख गुरुओं का योगदान सदैव समणीय है। अतः डॉ बेदी जी ने इस परंपरा का निर्वाह पूर्ण रूप से करते हुए साहित्य के माध्यम से भारतवर्ष की सेवा कर रहे हैं।

इसका आभास 'एकांत में शब्द' काव्य में ग्रंथ में राष्ट्र के साथ में लिखते हैं-

अपने राष्ट्र को जान
मेरा सभी का एक ही लक्ष्य
एक ही दृष्टि
एक ही उद्देश्य
बढ़े राष्ट्र आगे
मैं भी चलूँ पग-पग
अपने राष्ट्र के साथ।।

यहाँ कवि अपने पिता की प्रेरणा व आशीर्वाद को शिरोधार्य रखकर अपना सर्वस्व राष्ट्र को समर्पित कर रहे हैं। 'मेरा अनुभव संसार'में लिखते हैं - "शिक्षा आदान-प्रदान की प्रक्रिया है। अध्यापक जो कुछ लेता है जिंदगी भर उसे समाज के साथ बाँटता है, अध्यापक पारदर्शी बिम्ब होता है और विद्यार्थी उस बिम्ब में अपना चेहरा निहारते हैं।" वे आगे लिखते हैं- "अध्यापक के अनुभव का एक दूसरा अध्याय भी है - अपने विद्यार्थियों से प्रेरणा लेना। मेरे लेखन का बड़ा हिस्सा इसी अनुभव से निकला है। ज्ञान की यह यात्रा जारी है। मेरे अध्यापकीय अनुभव इसके पड़ाव हैं। अपने आपको तरोताजा करता हूँ और फिर निकल पड़ा हूँ।'

"नए अनुभवों की तलाश में' डॉ. बेदी जी की कविताओं का सशक्त गुण मर्यादापूर्ण शब्द सिद्धि का द्वार खोलती है। जिसमें सामाजिक वेदना का उपचार करते हुए यथार्थ को समझकर सक्रिय सृजन शक्ति प्रदान करती है।

मैं चाहता हूँ
मेरा कोई भी स्वप्न
तुम्हारी दहलीज पर
दम न तोड़े
और मेरा चिंतन
खुशबू बनकर

महानगर में फैल जाए।।

कथा सम्राट प्रेमचंद के गाँव में बेदी जी जन्मस्थली 'लमही' में सब कुछ नदारद देखकर वे बहुत दुखी होते हैं। वे पूछते हैं मन मानस के अपने प्रेमचंद से -

तुम कहाँ हो प्रेमचंद
लम्हे में आज
बहुत कुछ बदल गया है
तुम्हारी प्रतीक्षा में
कब लौटोगे

यहाँ किसी होरी का खेत में न मिलना, गाय व गोबर सब नदारद पाना, आत्महत्या करते कर्ज दबे किसान देखना व कच्ची गलियों की लुप्त रौनक इत्यादि सब कुछ कवि हृदय को भावुक कर देती है। वहीं दूसरी ओर 'निराला जी' की 'वह तोड़ती पत्थर' कविता की उत्तर पाठ की अनुभूति भी वे नारी चेतना को शिक्षा, स्वतंत्रता, समानता व आत्मनिर्भरता के साथ 'अब वह नहीं पत्थर' में नवीन पथ पर प्रदर्शित बलवती इच्छाओं के साथ आज की नारी बंधन वर्जित करते हुए विजय गाथा का संदेश कुछ इस प्रकार दे रहे हैं -

अब वह नहीं तोड़ती पत्थर
वह तोड़ती है अब
अंधविश्वासों के दुर्ग
चीर कर रख दिया उसने
हजारों पर्वतों का सीना
फिर वह क्यों तोड़े पत्थर
हो दिल्ली या फिर से इलाहाबाद ।।

'पृथ्वी का सोहाग' कविता में कवि प्रकृति संरक्षण को लेकर भी चिंतित है, जो वर्तमान संपूर्ण धरती का सबसे बड़ा चिंता का विषय है। उनका पर्यावरण प्रेमी कवि हृदय इस पीड़ा को अनेक भाषणों में, वार्तालाप में या उनके साथ संवाद में भी प्रकृति को लेकर चिंतन देखा जाता है। इस पीड़ा को अपने घर-बाहर की हरियाली, विभिन्न महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों में पौधरोपण उनमें प्रकृति प्रेम की नित्यता, नवीनता, प्रफुल्लता को इस कविता में दर्शाता है। जिसमें कवि पहाड़ों पर पर्यटकों द्वारा गंदगी फैलाने को लेकर चिंतित हैं। डॉबेदी जी को काव्य में विभिन्न चिंतन के साथ-साथ'पर्यावरण संरक्षण' पर भी चिंता व्यक्त करते हुए पढ़ा व सुना जा सकता है। 'संस्कृत साहित्य और पर्यावरण' ग्रंथ में नदियों में गंदगी पर अपनी चिंता निम्न शब्दों में व्यक्त करते हैं - "वस्तुत: नदियों के व्यापक महत्व के पीछे पर्यावरण की भावना ही है, लेकिन आप जहाँ एक और मनुष्य इन नदियों को देवी माता मानकर पूजा करता है वहीं दूसरी ओर कूड़े-कचरे डालकर शहर की गंदी नालियों को बहाकर अत्यधिक प्रदूषित कर नरक बना दिया है। विगत ने भी जब मानव ने ऐसा ही घोर अपराध किया और कूड़े कचरे को नदियों में फेंक दिया तो इसका गंभीर परिणाम यह हुआ कि यह प्रदूषित जल और कूड़ेकचरे ने समुद्र में जाकर प्राणघातक विष का रूप ले लिया जिसका परिणाम यह हुआ कि समुद्र मंथन से निकला घोर हलाहल, यह हलाहल आधुनिक विज्ञान के अनुसार प्राणघातक फौसजीन गैस था।

पर्वत धरती की पीड़ा है
सदियों से
धरती की पीड़ा मुक्त बनाते
पुकारते हैं सबको
पहाड़ों के दर्द को
छोड़ आते हैं यात्री।।

'एकांत में शब्द' की भूमिका में डॉ. रुपिका भनौत लिखती हैं - "मानवीय धरातल पर रहकर अपने जीवन में बड़ी बड़ी उपलब्धियाँ हासिल करने वाले

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 नवम्बर 2019
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

डॉ.हर महेंद्र सिंह बेदी समकालीन हिंदी जगत का वह नाम है, जो किसी परिचय का मोहताज नहीं है। जब भी साहित्यिक चर्चा अथवा उनकी बातों को सुनने का अवसर मिला है तब-तब आँखों पर पड़े भ्राँति के जाल उतरे हैं और सोच को नई दिशा और पारदर्शिता मिली है। अतः उनकी 'शब्द की तटस्था' कविता इस कथन को चित्रित करती है -

आन्तरिक संवाद की संवेदना
मौन पदचाप देती है सुनाई
अंकुरित होते हैं फिर
मन बहाव के पुष्प
भीतर बसा ज्ञान अखंड ज्योति-सा।।

'बुद्धम शरणम गच्छामि' कविता में ग्रंथों पोथियों, प्रवचनों से प्राप्त ज्ञान से अनभिज्ञ जिजीविषा चलाने वाला सब्जी विक्रेता रामू के प्रेम को कवि ने बड़े ही सुंदर आत्मीयता के साथ संजोया है। जिसमें साक्षात् परमात्मा की अनुभूति जिसे हम सहानुभूति कह सकते है। अतःदीर्घकाल से साधना मे लीन बड़े-बड़े साधकों के लिए यह दुःसाध्य है।

बिना चाहे वह
खोज रहा है पल पल
करता सब्जियों का नमन
तोड़ता प्रेम बंधन
रामू जानता है
बंद गली का आखिरी मकान में
वृद्ध दंपति
अंधेरा उतरने से पहले ही
उसकी प्रतीक्षा में
दरवाजा खोल कर बैठे हैं।।

अतः कवि लघु मानव की प्रतिष्ठा स्थापित करते हुए उसे बड़ेबड़े योग साधकों से भी उच्च पद आशीष कर देने में सक्षम हैं। 'वह आदमी' कविता में दलितों के दर्द में लिप्त मानव का आखिरी पुनः धरातल पर आना/ धराशायी होना। और मानवीय जीवन में अहंकार को चोट करता हुआ मजबूत प्रेम संबंधों का परिचय देता है।

सौ साल के लिए
वह ठिगना
वह बौना
अब कहीं दिखाई नहीं देता

'आत्मक्रांति' में कवि अंतःमन आत्मक्रांति का स्पंदन करता हुआ मानव को उसके सुखी जीवन के स्वप्न को पूरा करने का संदेश देता है।

रचा बसामन
वही साधना
वही जिंदगी का गीत गाना
आत्मक्रांति का स्पंदन
इसी में छुपा
मार्ग की महिमा बन
न रह जाए स्वप्न अधूरा।।

'लोकतंत्र की माया' में कवि लोकतंत्र से परे अर्थात् लोकतंत्र की परवाह न कर समाचार अमीरों के अनुकूल ही छपना, खबरें प्रसारित होना, आम जीवन जी रहे मनुष्य को भयभीत व आशंकित करती है। वहीं 'दूत मेघ कविता में एकाकी और संघर्षरत मानव की अस्थिरता का साक्षात्कार किया गया है। 'देव गीत' कविता में घर से दूर निर्वासित आदमी के जीवन को पैतृक घर के सदस्य, पैतृक आवास की यादें घर लौटने की अंतरमन खुशी की आत्मीयता से जोड़कर प्रस्तुत किया है।

देह से आत्मा तक
घर ही बन जाता है
फिर न दीवार
न द्वार
अपने बाहर-भीतर
चारों ओर लौटने की आवाज

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 नवम्बर 2019
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

वहीं दूसरी ओर मानवीय जीवन में मिठास घोलते हुए 'स्वास्थ्य विज्ञान पर बुजुर्गों की देखभाल' रचना पाठकों को सामाजिक बनाती है। 'नदी स्मृति कविता में कवि नदी के सूखने की चिंता के साथ जीवन की व्यापकता व भिन्नता के साथ मानवीकरण करते हुए जनमानस को जागृत किया है।

हँस्ती खेलती अठखेलियाँ करती/ अपने ही वेग से/ स्मृति पत्थरों पर
लिखती, अपनी गाथा
कहती, व्यथा-कथा
नदी की स्मृति में
मेरी उदासी कैसी ?

डॉ.बेदी जी आज शिक्षा के सर्वोच्च पद पर पदस्थ होते हुए भी अपने आप में सादगी व सहजता के साथ सदैव प्रस्तुत रहे हैं।

मिलन घड़ी
मनोहर यात्रा की मोहताज नहीं होती
विजय यात्रा
संबंधों की नैया बन
दूर तक बन जाती है
प्यासी धरती का बंधन।।

वास्तव में वे संबंधों को मजबूत करना भली-भाँति जानते हैं। उनके काव्य में इसे स्पष्ट देखा जा सकता है। कुलपति डॉ.रामशरण पांडे के अनुसार "डॉ बेदी जी के व्यक्तित्व का आकलन करना कोई सहज कार्य नहीं, इसका कारण यह नहीं कि वे असहज हैं। रहस्यमय हैं। वास्तव में भी बड़े सहज वह आत्मीय है। उनकी आत्मीयता के परिसर में भाँति-भाँति के लोग हैं, लेकिन उनके प्रति-पक्ष में बोलने वाला आज तक मुझे कोई नहीं मिला। विद्याव्यसनी तो वे हैं ही, साथ में वे परम विनयी हैं। उन्हें न तो अपने पद का गर्व है और न ही योग्यता विद्वता का। जबकि सामान्य रूप से देखा गया है। हँसकर, उठकर दोनों हाथ पसार कर मिलते हैं। दिल-दिल को हृदय को एक कर देते हैं।" अतः हम उनके आंशिक अध्ययनार्थी रहे हैं, हमें पुत्रवत् सम्मान प्यार देना, गले लगाना और सदैव भाषा साहित्य पर समय-समय पर सुझाव देना, हिंदी पथ पर नए आयाम-नए विचार प्रदान करना और हमारे साहित्य अध्ययन में आने वाले अवरोध को हटाकर नई दिशा देना यह एक सच्चा हिंदी प्रेमी ही कर सकता है। वास्तव में उनकी गुरुमत विचारधारा, उनका सद्व्यवहार व घनिष्ठ हिंदी प्रेम उन्हें सादगीपूर्ण व्यक्तित्व के धनी आत्मीयता व धैर्य को प्रकट करती है।

निष्कर्ष

बेदीजी ने अपने साहित्य सृजन से समाज को दिशा देने का काम किया है। साहित्य का अंतिम उद्देश्य समाज का हित है। उनके लेखन में विशिष्ट प्रकार की सुगंध है। उनके व्यक्तित्व में कहीं पर भी दुराव-छिपाव नहीं है। डॉक्टर बेदी जी के शब्दों में-"मैं अपनी नजर में मैं भरापूरा इंसान हूँ मेरे अंदर की दुनिया खूबसूरत है। जाति-पाँति, रंग-नस्ल के सवाल मुझे छू नहीं पाते। अपने आसपास की दुनिया बहुत अच्छी लगती है।... आज इंसान और विद्वान के रिश्ते को समझने की जरूरत है मुझे लगता है अच्छे विद्वान से सच्चा इंसान कहीं बेहतर है।

संदर्भ ग्रन्थ

1 एकांत में शब्द डॉ.हर महेंद्र सिंह बेदी आस्था प्रकाशन जालंधर पंजाब

2 पर्यावरण और वाड्मय- डॉ हर महेंद्र सिंह बेदीडॉ महेश दिवाकर अखिल भारतीय साहित्य कला मंच मुरादाबाद

3 काव्य निधि, संपादन ग्रंथ, डॉ हर महेंद्र सिंह बेदी डॉ.सुधा जितेंद्र कस्तूरी लाल एंड संस अमृतसर

3 बुजुर्गों की देखभाल- डॉ.हर महेंद्र सिंह बेदी, पुष्पांजलि प्रकाशन दिल्ली

4 पारस मणि, साहित्य पत्रिका त्रिवेणी- साहित्य अकादमी जालंधर संस्करण जुलाई 2017

5 डॉ हर महेंद्र सिंह बेदी : व्यक्तित्व, विभास, कुलपति डॉ राम सज्जन पांडेय द्वारा पारस मणि जुलाई 2017

6 मेरा अनुभव संसार डॉ हर महेंद्र सिंह बेदी

7 अपने आईने में - डॉ हर महेंद्र सिंह बेदी

8 एकांत में शब्द : ईमानदार अनुभूतियों का पारदर्शी संसार - भूमिका द्वारा डॉ.रूपीका भनोट, कन्या महाविद्यालय जालंधर